मधुबन ओम् शान्ति अंक 338 सितम्बर 2020

पत्र-पुष्प

''स्व-उन्नति निमित्त शुभ प्रेरणायें, याद पत्र''

(26-8-20)

विश्व कल्याणकारी, सर्व के हितकारी प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा अन्तर्मुखता की गुफा में बठ दुनिया की सुध-बुध भूलने वाले, अपनी बीजरूप स्थिति द्वारा सारे विश्व को लाइट माइट देने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - अपनी मीठी प्यारी दादी प्रकाशमणि जी का 13वां स्मृति दिवस 25 अगस्त 2020 को आप सभी ने विश्व बन्धुत्व दिवस के रूप में मनाया होगा। दादी जी ने हर एक को ऐसी शक्तिशाली पालना दी है, जो सबके दिलों में उनकी यादें समाई हुई हैं। शान्तिवन में भी इस बार कुछ ही मुख्य भाई बहिनों ने दादी जी के यादगार प्रकाश स्तम्भ पर अपनी स्नेह श्रंधाजलि अर्पित की। वर्तमान समय बरसात की ठण्डी फुव्वारों के बीच मधुबन के सभी स्थानों पर बहुत अच्छी तपस्या चल रही है। आप सभी भी अपनी ऊंचे से ऊंची श्रेष्ठ स्थिति बनाने का पुरुषार्थ कर रहे होंगे।

वर्तमान समय प्रमाण बाबा तो हम बच्चों को तीव्र पुरुषार्थ का विशेष इशारा देते, यही कहते हैं बच्चे, अब इन विकारों के अंश को भी समाप्त करो, इसके लिए अन्तर्मुखी बन सेकण्ड में शरीर से डिटैच हो जाओ। स्वयं को आत्मा समझ प्यार के सागर बाबा को बहुत प्यार से याद करो तो परफेक्ट बन जायेंगे। कैसी भी नाज़ुक परिस्थितियों में घबराने के बजाए उनसे पाठ पढ़कर स्वयं को परिपक्व बना लो। एडजेस्ट होने की शक्ति नाज़ुक समय पर पास विद आनर बना देगी। बोलो, हमारे मीठे-मीठे भाई बहिनें सभी ने अब ऐसी मजबूत श्रेष्ठ स्थिति बनाई है ना! बाबा तो कहते बच्चे अब आज्ञाकारी के चरित्र का चित्र बनाओ। सदा श्रीमत प्रमाण चलते चलो तो परमात्म दुआयें आपके लिए सेफ्टी का रक्षा कवच बन जायेंगी। सेवाओं की बदलती हुई रूपरेखा प्रमाण अभी साइंस के साधनों का सभी अच्छा ही लाभ ले रहे हैं। सब तरफ ऑनलाइन क्लासेज़ वा मुरलियां सुनते सभी रिफ्रेश होते रहते हैं। कई नई-नई आत्मायें भी ऑनलाइन राजयोग की क्लासेज़ कर रही हैं। इन सेवाओं के साथ-साथ स्व की अच्छे से अच्छी स्थिति बनाने के लिए

1) अब बेहद की वैराग्य वृत्ति को धारण करना है। न किसी से राग हो, न द्वेष। 2) शीतल काया वाला योगी बनना है, जरा भी आवेश या आवेग का अंश न हो। संकल्प में भी कभी क्रोध, रोब या चिड़चिड़ापन न आये। 3) हमें अपने संकल्प उतने ही खर्च करने हैं जिससे वायुमण्डल में साइलेन्स का प्रभाव रहे। मेरे संकल्प साइलेन्स के वायब्रेशन को डिस्टर्व न करें। अगर मेरी स्थिति खराब हुई तो उसका असर अनेकों पर पड़ता है। 4) मेरा एक भी बोल ईश्वरीय मर्यादा के विपरीत न हो। हर बोल मधुर और मर्यादायुक्त हो तब संगठन एकमत रह सकता है। 5) मनमत व परमत से मुक्त रह, सदा श्रीमत की पटरी पर जी हाज़िर, जी हज़ूर कर चलते रहना है तो मायाजीत, प्रकृतिजीत बन जायेंगे।

मीठे बाबा की ऐसी मीठी मीठी शिक्षायें अब सदा स्मृति में रख उड़ती कला में उड़ते रहना है। नीचे की कोई भी बातें बुद्धि को अपनी ओर आकर्षित न करें। अच्छा! आप सभी का स्वास्थ्य ठीक होगा।

सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

"दिव्य जन्म की स्मृति द्वारा साधारणता को समाप्त करो"

1) एक भी ब्राह्मण जन्मधारी आत्मा साधारण नहीं, अलौकिक है। हर एक में कोई न कोई विशेषता की अलौकिकता है इसलिए बापदादा को बच्चों पर नाज़ है। ऐसे ही अपने में इस अलौकिक जन्म का, अलौकिकता का, रुहानियत का, मास्टर सर्वशक्तिवान का नशा सदा रहे तो सर्व प्रकार की कमज़ोरियां सहज समाप्त हो जायेंगी।

2) बापदादा ने हर एक बच्चे को दिव्य जीवन अर्थात् दिव्य संकल्प, दिव्य बोल, दिव्य कर्म करने वाली दिव्य मूर्तियां बनाया है। दिव्यता संगमयुगी बच्चों का श्रेष्ठ श्रृंगार है। दिव्य-जीवनधारी आत्मा किसी भी आत्मा को अपने दिव्य नयनों द्वारा अर्थात् दृष्टि द्वारा साधारणता से परे दिव्य अनुभूतियां करायेगी। उनके सामने आने से ही साधारण आत्मा अपनी साधारणता को भूल जायेगी।

3) बाप ने हर बच्चे को दिव्य दृष्टि, दिव्य बुद्धि का वरदान दिया है। अगर बुद्धि दिव्य है तो उसमें साधारण बातें आ नहीं सकती। वे साधारण कर्म कर नहीं सकते। चाहे दूसरों के समान आप भी व्यवहार करते हो, व्यापार करते हो या गवर्मेन्ट की नौकरी करते हो, मातायें खाना बनाती हैं। देखने में साधारण कर्म है लेकिन आपका साधारण कर्म भी लोगों से न्यारा ''अलौकिक'' दिव्य कर्म हो।

4) दिव्य जन्मधारी ब्राह्मण तन से साधारण कर्म नहीं करते, मन से साधारण संकल्प नहीं कर सकते, धन को साधारण रीति से कार्य में नहीं लगा सकते। जैसे परमात्मा प्रवेश होने योग्य है, वैसे मरजीवा जन्मधारी ब्राह्मण आत्मायें अर्थात् महान आत्मायें भी प्रवेश होने योग्य हैं। जब चाहो कर्मयोगी बनो, जब चाहो परमधाम निवासी योगी बनो, जब चाहो सूक्ष्मवतन वासी योगी बनो। स्वतन्त्र हो। तीनों लोकों के मालिक, त्रिलोकीनाथ हो। तो नाथ अपने स्थान पर जब चाहें तब जा सकते हैं।

5) आप नशे, नॉलेज और अनुभव से कहते हो कि हमको बापदादा ने ब्राह्मण जन्म दिया है। रचता को, जन्म को, जन्मपत्री को, दिव्य जन्म की विधि और सिद्धि.. सबको जानते हो। वह साधारण जन्मधारी आत्माएं तो अपना बर्थ-डे अलग मनाती, फ्रैण्ड्स-डे अलग मनाती, पढाई का दिन अलग मनाती और आपका बर्थ-डे भी वही, तो मैरेज-डे, पढ़ाई का दिन भी वही है। मदर-डे कहो, फॉदर-डे कहो, इंगेजमेंट-डे कहो - सब एक ही है। संगमयुग के इस महान् जन्म की यह विशेषता भी है और विचित्रता भी है।

6) बापदादा हर एक दिव्य जन्मधारी ब्राह्मण आत्माओं के भाग्य का सितारा चमकता हुआ देख हर्षित होते हैं और सदा यही गीत गाते रहते -**''वाह हीरे तुल्य जीवन वाले ब्राह्मण बच्चे वाह''!** इस जन्म की तुलना और जन्मों से कर ही नहीं सकते। इस दिव्य जन्म का बन्धन नहीं, सम्बन्ध है। कर्मबन्धनी जन्म नहीं, यह कर्मयोगी जन्म है। इस अलौकिक दिव्य जन्म में ब्राह्मण आत्मा स्वतन्त्र है न कि परतन्त्र। जब तेरे को मेरे में लाते हो तब परतन्त्र होते हो।

7) इस देह में रहते भी सदा स्वतन्त्र होकर रहो क्योंकि यह लोन मिली हुई देह है। आपका जो वायदा है कि जहाँ बिठायेंगे वहाँ बैठेंगे, जो कहेंगे वह करेंगे.... तो बाप की बन्धनी आत्मा हो न कि कर्म बन्धनी आत्मा हो। कोई भी कर्म बाप के डायरेक्शन पर कर रहे हो इसलिए स्वतन्त्र हो, चलाने वाला चला रहा है, आप चल रहे हो। जैसे सरस्वती माँ की यह विशेष धारणा थी 'हुक्मी हुक्म चला रहा' है, ऐसे फॉलो फादर और मदर।

8) ब्रह्मा के साथ आप अनन्य ब्राह्मणों का भी जन्म हुआ इसलिए दिव्य जन्म की तिथि, वेला, रेखा ब्रह्मा की और शिवबाबा के अवतरण की एक ही होने कारण शिव बाप और ब्रह्मा बच्चा परम आत्मा और महान आत्मा होते हुए भी ब्रह्मा बाप समान बना। समानता के कारण कम्बाइन्ड रूप बन गये। बापदादा सदा इकट्ठे बोलते हो, अलग नहीं। ऐसे ही अनन्य ब्राह्मण बापदादा के साथ-साथ ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी के रूप में अवतरित हुए हैं।

9) यह भाग्यवान जन्म हर सेकेण्ड, हर समय बधाईयों से भरपूर है इसलिए हर श्वाँस में खुशी का साज़ बज रहा है। श्वाँस नहीं चलता लेकिन खुशी का साज़ चल रहा है। इस दिव्य जन्म का यह खुशी का साज़ अर्थात् श्वाँस दिव्य जन्म की श्रेष्ठ सौगात है। श्वाँस चलना अर्थात् साज़ चलना। जैसे श्वाँस बन्द नहीं हो सकता, ऐसे साज़ भी बन्द नहीं हो सकता।

10) इस अलौकिक दिव्य जन्म में सदा श्रेष्ठ स्वभाव, ईश्वरीय संस्कार होने कारण स्वभाव संस्कार कभी दु:ख नहीं देते। जो बापदादा के संस्कार वह बच्चों के संस्कार, जो बापदादा का स्वभाव वह बच्चों का स्वभाव। स्व-भाव अर्थात् सदा हर एक के प्रति स्व अर्थात् आत्मा का भाव। स्व श्रेष्ठ को भी कहा जाता है। स्व का भाव वा श्रेष्ठ भाव यही स्वभाव हो। सदा महादानी, रहमदिल, विश्व कल्याणकारी, यह बाप के संस्कार सो आपके संस्कार हों।

11) जैसे ब्रह्मा बाप के श्रेष्ठ संकल्प के आह्वान द्वारा आप सबने यह दिव्य जन्म प्राप्त किया है, ऐसे ही श्रेष्ठ संकल्प की विशेष रचना होने के कारण अपने संकल्पों को श्रेष्ठ बनाने के विशेष अटेन्शन में रहते हो ना! यदि संकल्प के ऊपर पूरा अटेन्शन है तो किसी भी प्रकार की सूक्ष्म माया के वार को परिवर्तन करके विजयी बन सकते हो।

12) आत्मा के उड़ने की स्पीड दिव्यता के आधार पर है। जैसे ऐरोप्लेन उड़ते हैं, तो जितनी पावर वाला होगा उतनी स्पीड तेज़ होगी। तो यहाँ भी जिसकी जितनी दिव्यता है, स्वच्छता है अर्थात् डबल रिफ़ाइननेस है। जितना बुद्धि दिव्य है, उतनी स्पीड तेज होगी। एक सेकेण्ड में और स्पष्ट रूप में चक्कर लगा सकेंगे। स्वदर्शन-स्थिति में स्थित रहने वाले चलते-फिरते नैचुरल रूप में अपने दिव्य संकल्प, दिव्य दृष्टि, दिव्य बोल, दिव्य कर्म द्वारा अन्य आत्माओं को भी दिव्य मूर्त अनुभव होंगे।

13) वर्तमान समय ब्राह्मण आत्माओं को दिव्यता का अनुभव करना है, देवता तो भविष्य में बनेंगे, अभी दिव्यता स्वरूप होना है। दिव्यता स्वरूप अर्थात फरिश्ता। यह दिव्यता की शक्ति साधारणता को समाप्त कर देती है। हर कर्म में जितनी दिव्यता की शक्ति लायेंगे उतना ही सबके मन से, मुख से स्वत: ही यह बोल निकलेंगे कि यह दिव्य दर्शनीय मूर्त हैं।

14) भक्त आत्मायें जब आपकी जड़ मूर्तियों के आगे जाते हैं तो वह मूर्तियां बोलती तो कछ भी नहीं हैं फिर भी भक्त लोग उनसे कोई न कोई प्राप्ति करके आते हैं। वह उनके दिव्यता के वायब्रेशन से और दिव्य नयनों की दृष्टि को देख वायब्रेशन लेते हैं। उनके मस्तक द्वारा, नयनों द्वारा दिव्यता की अनुभूति होती है। आप सबने चैतन्य में यह सेवा की है तब तो जड़ मूर्तियां बनी हैं। तो दृष्टि द्वारा शक्ति लेना और दृष्टि द्वारा शक्ति देना, यह प्रैक्टिस करो।

15) दिव्य बुद्धि को कार्य में लगाने से सफलता अवश्य होगी। हर कार्य दिव्य-अलौकिक अनुभव होगा। यह दिव्यता ही सफलता का आधार है। दिव्य बुद्धि प्राप्त करने वाली आत्मायें सदा अदिव्य को भी दिव्य बना देती हैं। जैसे गाया जाता है कि पारस अगर लोहे को लगता है तो वह भी पारस बन जाता है। ऐसे दिव्य बुद्धि के वरदान से अदिव्य को भी दिव्य के रूप में बदल देगी। अदिव्य वातावरण या अदिव्य चलन, बोल दिव्य बुद्धि के ऊपर असर नहीं करेगा।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"बाबा के प्यार के रिटर्न में समान और सम्पन्न बनो"

(दादी गुल्जार 16-07-02)

बाबा की हम बच्चों में जो भी उम्मीदे हैं, उन्हें हमें ही पूरा करना है। हम बाबा की उम्मीदों के सितारे हैं। भगवान कहे कि मेरी उम्मीदों के सितारे ये बच्चे हैं, अभी भगवान हमारा बाबा बन गया है, सखा बन गया है। इसलिये हमारे लिये कभी-कभी कॉमन भी हो जाता है। लेकिन वैसे अगर देखा जाए तो भगवान कहे मेरी उम्मीदों को पूरा करने वाले यह उम्मीदों के तारे हैं। भगवान का निश्चय हमारे में है, तो हम सोचें कि जहाँ भगवान का निश्चय है, वहाँ तो निश्चय में विजय है ही।

दूसरा बाबा ने हम सबको कहा आशाओं के दीपक हो, जैसे दीपक सदा चाहे खुद अन्धियारे में रहे लेकिन दूसरों को रोशनी देता है। लेकिन हम दीपक ऐसे हैं जो स्वयं भी रोशनी में रहते हैं और औरों को भी रोशनी देते हैं। तो बाबा की हम सब बच्चों में सबसे बड़ी आश कौन-सी है? बाबा ने भिन्न-भिन्न रूप से अपनी आशायें बताई हैं, इस ग्रुप के लिये बाबा की यही आश रहती है कि बस, एक एक मेरा बच्चा राजा बच्चा बनें। एक एक बच्चा मेरे समान बनें। हम सबने बाबा के आगे हाथ उठाया था कि बाबा से हमारा 100 परसेन्ट प्यार है। इस सबजेक्ट में तो हम सब पास हैं। परिवार से प्यार में कई खिट-खिट की बातें आती हैं, लेकिन बाबा से प्यार में सब पास हैं। उसी प्यार में सब समर्पण हुए हैं। लेकिन हम समर्पण क्यों हुए हैं? कुछ सोच-समझ कर देखकर हुए ना, कुछ प्राप्ति के आधार पर हुए। तो बाबा से जब हमारा प्यार है तो जिससे प्यार होता है उसके लिए कुछ भी करना, कुछ भी मानना हो ही जाता है। तो बाबा को प्यार का रिटर्न और कुछ नहीं चाहिए लेकिन यह रिटर्न जरुर चाहिए कि बच्चे बाप समान बनें।

बाबा ने कहा यह मेरा फर्स्ट ग्रुप है तो फर्स्ट ग्रुप क्या करेगा? फास्ट ही जायेगा। तो बाप समान बनने में हमको बाबा के यह टाइटल याद करने चाहिए। हम सबका बाबा से सच्चे दिल का प्यार है, सिर्फ एक प्यार शब्द ही ले लो, प्यार के पीछे दुनिया भी क्या नहीं कर रही है। वह तो शरीर का गन्दा प्यार है, उसके

पीछे भी पागल हो रहे हैं। और हमारा तो भगवान से प्यार है, कोई महान आत्मा, धर्म आत्मा से भी नहीं है, परम आत्मा से हमारा प्यार है। और हमको बाबा ने इतना प्यार दिया है, उस प्यार का हम सबने अनुभव किया है। तो उस प्यार का रिटर्न वा निशानी यही है कि जो बाप का संकल्प है वह हर बच्चे का संकल्प हो। ब्रह्मा बाबा को तो हमने प्रैक्टिकल देखा या जीवन कहानी सुनी। बापदादा का हर समय संकल्प क्या रहा? शुभ भावना, शुभ कामना हर बच्चे के प्रति रही। भले बाबा रिपोर्ट भी सुनता था, सेन्टर्स के खिटपिट की बातें भी आती थी, चाहे थोड़े थे लेकिन बातें तो सबकुछ थी। लेकिन ब्रह्माबाबा ने जैसे हर बच्चे को अपना समझ करके, कमी पर समझाया, इशारा दिया। लेकिन कमी को बार-बार देखकर वर्णन नहीं किया। ब्रह्माबाबा कभी भी किसी बच्चे को डायरेक्ट शिक्षा नहीं देता था। लेकिन बाबा मुरली में कह देता था और मुरली में ऐसे कहता था जो जिसकी गलती होती थी वह खुद ही महसूस करता था कि आज बाबा ने मेरे ऊपर मुरली चलाई। लेकिन समझो मुरली चला करके फिर कमरे में गया, और हम बाबा के सामने गई तो बाबा कभी महसूस नहीं होने देगा कि आज बच्ची के ऊपर मैंने मुरली चलाई। और ही कहेगा आओ बच्ची, बैठो बच्ची। तो बाबा भले शिक्षा देता था लेकिन दिल में नहीं रखता था। और ही उसे स्वमान में स्थित करा देता था। हम समझ रहे हैं कि मेरे को बाबा ने शिक्षा दी और हम एक दो को भी देखते थे, देखो बाबा ने फलाने को मुरली में शिक्षा दी। लेकिन बाबा कभी उस बात को दिल में नहीं रखता था। दिल में फिर भी शुभ भावना और शुभ कामना रही। अभी यह शब्द वर्तमान समय में हम कहते हैं कि एक दो के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखो। ठीक है। शिक्षा देना, इशारा देना लेकिन शुभ भावना रख करके इशारा देना, वह और चीज़ है। हम यह समझते हैं क्योंकि सेन्टर पर बातें तो होती हैं और होंगी, ऐसा नहीं है बातें खत्म हो जायेंगी। बातें तो बढ़ेंगी।

बाबा के पास कईयों का यह संकल्प आता है कि पहले शुरू-शुरू में यह बातें नहीं होती थी। अभी दिन प्रतिदिन पता नहीं क्या हुआ है वायुमण्डल, जो और ही यह बातें बढ़ रही हैं। तो कई बच्चों को यह संकल्प उठता है कि पहले और ही अच्छा था, अभी निगेटिव बातें क्यों बढ़ रही हैं? तो बाबा ने कहा कि देखो कई बीमारियाँ ऐसी होती हैं जो खत्म होने के पहले और ही बाहर निकलती हैं। बाहर निकलकर ही खत्म होती हैं। तो 63 जन्मों का हिसाब-किताब चुक्तू यहाँ ही करना है। धर्मराजपुरी में तो हमको जाना नहीं है। जब धर्मराजपुरी में नहीं जाना है तो यहाँ ही हमको चुक्तू करना है। चाहे तन से, चाहे मन से, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से करना तो है ही। कई कहते हैं कि हमारे सेन्टर्स थोड़ा बदली हो जायें तो हमारी अवस्था बड़ी अच्छी हो सकती है। यह थोड़ा हो जाये, साथी थोड़े परिवर्तन हो जायें तो मेरी अवस्था बहुत ऊंची उठ सकती है, लेकिन बाबा ने जवाब दिया है कि यह सेन्टर ही आपके पेपर हॉल हैं और पेपर हॉल में पेपर होना आवश्यक है। पेपर अनुभवी बनाता है, अगर हम समझदार हैं तो। अगर समझदार नहीं हैं तो पेपर हमको दिलशिकस्त भी बना सकता है।

किसकी क्या नेचर और कमजोरी है उसको देखकर हम समझ जायें कि इसकी यह नेचर है तो मेरे को प्रभाव नहीं पड़ेगा। जब कोई हमारे सामने आता है तो उसकी नेचर याद आने से पास्ट की बातें याद आ जाती हैं। कुछ परसेन्ट घृणा भी होती है। देखो, यह ऐसे ही करते हैं, यह बदलने वाले ही नहीं हैं। हमने सर्टीफिकेट दे दिया, यह तो बदलनी ही नहीं है। लेकिन हम कौन-से विधाता हैं जो हम उसको सर्टीफिकेट देते हैं। आप भले 10 सेन्टर बदली कर लो, चुनकरके भी बदली करो लेकिन हमें अनुभव है कि कोई कितने भी स्थान चेन्ज कर ले लेकिन आपका पेपर लेने वाला वहाँ भी मिल जायेगा। यह निश्चित है क्योंकि बिना पेपर के कोई पास हुआ है क्या? यह तो आयेंगे। यह बीमारियाँ निकल रही हैं जिसको आप नहीं समझ सकते हो। उसमें परेशान नहीं हो, ऐसे नहीं सोचो कि यह पहले तो नहीं होता था, अभी क्यों... क्यों शब्द आया तो क्यू लगी। क्यों एक फाटक है व्यर्थ संकल्पों के क्यू का, इसीलिए बाबा कहते हैं कि आप समझदार बच्चे हैं, सर्विसएबुल, नॉलेजफुल हैं। तो जब नॉलेजफुल हो तो अभी समझ लेना चाहिए कि यह बातें तो होंगी ही लेकिन मुझे क्या करना है। कई बार हम उन बातों को ज्यादा सोचते हैं इसने यह क्यों किया, यह कब तक करेगा, यह कैसे होगा, यह बदलेगा या नहीं बदलेगा, उसका चिन्तन ज्यादा करते हैं लेकिन स्व को बदलने का चिंतन कम करते हैं।

कोई आत्मा कमजोर है, गलती कर रहा है, तो अगर आप अपनी शक्ति से उस कमजोर को आगे बढ़ा सकते हो तो भले बढ़ाओ, बहुत अच्छा है लेकिन ऐसा न हो कि उनके संग का रंग आपको भी लगे और आप व्यर्थ ही सोचते रहो। उसकी गलती का आपके ऊपर भी प्रभाव पड़ गया ना, यह नहीं होना चाहिए। बाकी अगर मैं शुभ चिन्तक हूँ, शुभ भावना रखती हूँ तो ठीक है। अगर किसी में सहनशक्ति नहीं है, मेरे में सहनशक्ति है तो मैं एक हाथ की ताली तो नहीं बजाऊं। ताली बजने से तो आवाज होता है, फैलता है। ताली नहीं बजेगी तो हम दो तक ही बात रहेगी, तीसरे तक नहीं जायेगी। वायुमण्डल तो नहीं बनेगा, यह भी ठीक है। इसीलिए बाबा ने सन्देश में कहा कि पुरानी बातों को छोड़ दो।

जिसमें किसी भी प्रकार का अभिमान होगा - चाहे सेवा का, चाहे इन्वेन्शन निकालने का, चाहे बुद्धि का, कोई भी सूक्ष्म

अभिमान है तो जब कभी थोड़ा कुछ भी उसे कोई इशारा देगा तो उसे अपमान बहुत जल्दी फील होगा। तो बाबा हम सबको इन बातों से मुक्त करके अपने समान बनाना चाहते हैं।

अब हम अपने संकल्प शक्ति को जमा करें। अभी पावरफुल संकल्प बनाने का चांस है। संकल्पों पर ब्रेक इतनी पॉवरफुल हो, कन्ट्रोलिंग पॉवर हो जो बात हुई और एकदम जैसे मिट गई। हमको जो बाबा कहता है कि बिन्दी लगाओ तो बिन्दी लगाने में कितना टाइम लगता है? सेकेण्ड भी न लगे, इतनी मन के ऊपर हमारी कन्ट्रोलिंग पॉवर हो! सेकण्ड भी हमारा वेस्ट न जाये क्योंकि उसी सेकेण्ड अगर अन्तकाल आ जाये तो अन्त मते सो गति तो वही हो जायेगी। इसलिए मम्मा का यही स्लोगन था – ''हर घड़ी अपनी अन्तिम घड़ी समझो।'' तो अभी यह जो समय मिला है इसमें अपने खजाने जमा करो।

समय का खजाना, शक्तियों का खजाना जमा करो, अपनी रियलाइजेशन करो बाकी दूसरी बातें नहीं सोचो। जो बाबा कहता है बच्चे समान बनो, उस समानता में (बाबा में और हमारे में) क्या अन्तर है? क्योंकि हम जो अपने आपको जान सकते हैं, वह कोई नहीं जान सकता है। तो अभी हम अपने सब खज़ाने जमा करें। जमा वालों को नशा रहता है और निश्चिंत भी रहते हैं। संगम का एक सेकण्ड, सेकण्ड नहीं है। एक सेकण्ड एक वर्ष के समान है। 21 जन्म का सारा हिसाब करना है और पीछे भी जो हम पूज्य बनेंगे वह भी संगम के पुरुषार्थ अनुसार बनेंगे और अभी भी जब कोई ऐसी परिस्थिति या बातें आती हैं तो जमा का खाता बहुत काम में आता है। कई बार हम किसी के प्रति थोड़ा मीठा बोल बोल देते हैं, तो सामने वाला उमंग-उत्साह में आ जाता है। उसे वह भूलता नहीं है। तो हमारे एक सेकण्ड जमा की भी बहुत वैल्यु है, व्यर्थ नहीं जाता है। सभी को यह नशा या खुशी तो होगी ही कि हम विजय माला के मणके हैं। नॉलेज की भी स्मृति रहे तो किसी भी बात में हमें नथिंगन्यु लगेगा। उस स्मृति के आधार से हम कैसा भी पेपर हो उसे सहज ही पार कर सकेंगे। तो स्मृति का स्वीच सदा ऑन करके रखो, सिर्फ इसमें बॉडी कान्सेस न हो। हम निमित्त हैं, अपनापन न हो, बाबा ही याद आये। स्थिति अच्छी हो, नॉलेज का नशा हो, स्मृति हो कि हम कौन हैं? और हमको किसने निमित्त बनाया है? अगर निमित्त बने हुए हैं तो हमारे बोल में, मधुरता, निर्मानता और वह परमात्म शक्ति सब होता है, जिससे हम सेवा में सहज ही सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन ''निमित्त और निर्मान'' हमको सदा याद होना चाहिए। मैं-पन कभी नहीं आये।

बिचारे हमारे भाई-बहिन इतने दु:खी हैं, अन्जान हैं, अपने बाप को ही नहीं जानते हैं तो उस विधि से उस स्मृति से अगर हम सेवा करते हैं, उस सेवा का फल निकलता है। बात को भूलो, पर बाप को नहीं, तो कोई काम आपसे नीचे ऊपर नहीं होगा। हरेक के पार्ट का कुछ राज़ है, हर एक का महत्व है, उसको बुद्धि में रख उनसे साथ निभायेंगे तब सम्बन्धों की समस्यायें समाप्त होंगी। बाबा ने हम सबको चुना है, उस दृष्टि से हम देखें, कोई तो विशेषता होगी जरुर तब तो बाबा अपना बनाके निमित्त बनाया है। तो हमें भी उसी हिसाब से उनसे काम लेना चाहिए। हम किसी की गलती और कमजोरी को न देख उनकी विशेषता को सामने लायें तो नैचुरल उस आत्मा के प्रति प्यार होगा, स्नेह होगा और साथ दे करके आगे बढ़ाने की शुभ भावना होगी। अच्छा।

"बाहर्मुखता से छूटना है तो सब बातों को अवाइड करके अन्तर्मुखी बनने का अभ्यास करो" (दादी जानकी 27-8-04)

अपने को आत्मा समझना और एक को याद करना – बाबा बार-बार यही पाठ पक्का कराता है क्योंकि आत्मा समझने से देह-अभिमान छूटेगा और बाबा को याद करने से पाप कटेंगे। यह बात सारे दिन में न भूलें। बाबा कहता है मैं घड़ी-घड़ी याद दिलाता हूँ क्योंकि बच्चे घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं।

ऐसे तो मरने पर भी आत्मा शान्त चित नहीं हो सकती है, तो जीते कैसे हो सकती है? शान्ति कोई सहज बात है क्या! पर बाहर की बातों से फ्री हो करके जब डीप जाओ, अन्दर ही अन्दर चले जाओ तो जो मरने से भी शान्त नहीं होते थे, वो जीते जी शान्त हो जाते हैं। अन्दर आत्मा निजी स्वरूप को जान करके उसमें अन्दर जब तक न जाये तब तक बाहर नहीं आना। जल्दी-जल्दी जम्प लगाके बाहर आते हैं, अरे अन्दर तो चले जाओ ना, डुबकी लगाओ तो सही। जिसको स्वीमिंग करना नहीं आता, उसे डर लगता है कि डूब न जाऊं तो इसमें भी सब बातों को छोड़ना पड़ेगा, भूलना पड़ेगा, किसको बुद्धि से अवाइड करके अन्तर्मुखी रहना पड़ेगा क्योंकि बाहर्मुखता ऐसा खींचती है, बात मत पूछो।

हरेक अपने दिल से पूछे हम ऐसे अन्तर्मुखी बनें हैं जो अन्तर्मुखी सदा सुखी का अनुभव होता रहे। तो अन्तर्मुखी वो बनेगा जो अपने अन्दर से बाप की बातें सुनता है, मुख के अन्दर है, पर बोलता नहीं है मुख। सुनता है अपने को देखने के लिये। तो बाहर्मुखता की आदत से छूटने के लिये अन्दर की आंख से अन्तर्मुखी बनना पड़ेगा। अन्दर भी बाहर की बातें सोचने की आदत है, हरेक दिल से पूछे सारा दिन क्या करते हैं? स्वप्नों में क्या करते हैं? अन्दर संकल्प में शान्ति नैचुरल हो। नींद नहीं आती है, ठीक है कोई बात नहीं है, अच्छा है, मज़ा है – बाबा को याद करने का, अपने आपको देखने का। जितना टाइम सोते हैं, बाबा कहता है कमाई तो नहीं होती है। पहले-पहले बाबा कहते थे जागते कोई पाप करे उससे तो जाकर सो जाये तो अच्छा है। परन्तु कई ऐसे हैं जो स्वप्नों में भी पाप करते हैं, तो हम अटेन्शन देते हैं, जागते हैं तो भी अटेन्शन है। कोई हमको खराब ख्याल आ नहीं सकता। किससे बदला लेने का ख्याल आ नहीं सकता। मानो मैं उदास हुई तो पहले ख्याल आया ना। बाहर से करके मुस्कराये, पर अन्दर से देखते हैं तो लगता है कि इसके अन्दर कुछ है। बाहर से हेलो, ओम् शान्ति करता है पर अन्दर कुछ और है।

तो हरेक अपने आपसे पूछो - मेरे अन्दर कुछ है क्या? दिल से पूछो, क्या है? दिल मेरी है, अपने दिल से हम पूछ सकते हैं कि हमारे दिल में क्या है? साफ है, सच्ची है? साहब राज़ी है? अपनी दिल से पूछो - मैं खुश हूँ? न खुश हूँ तो कारण? कारण कुछ भी नहीं है, सिर्फ न खुश रहने की आदत है। पुराना कोई संस्कार है तो दिल से खुश कैसे रहेंगे? पर सच्ची दिल है, साहब राज़ी है तो खुश है। दिल की सच्चाई में कमी है, साहब राज़ी नहीं है तो क्या होगा? भगवान भी कहे, सर्टीफिकेट देवे कि यह मेरा बच्चा सन्तुष्ट है, वरदान दे देवे सदा सन्तुष्ट भव!

जब साइलेन्स में डीप जायेंगे, अपने अन्दर की सच्ची शान्ति को भंग नहीं करेंगे। नियम प्रमाण शान्त रहने का जो नियम है वो तोड़ेंगे नहीं। कारण आया और अशान्त हुए तो और अशान्ति शुरू हो गई फिर तो शान्त होना मुश्किल है। फिर वह यह नहीं कहेंगे कि अशान्ति को खत्म करके शान्त हो जायें, नहीं, एक कारण, दूसरा कारण, तीसरा कारण... ऐसे कारणों की लम्बी लिस्ट हो जायेगी। अशान्त मन हो तो क्या करेंगे? कारण सुनायेंगे ना। कारण अभी का नहीं है पर कितने सालों का कारण है। ऐसे थोड़ेही दु:ख होता है, ऐसे थोड़ेही अशान्ति होती है? कारण है ना। पर कारण का निवारण ऐसे नहीं मिलेगा। शान्त मुझे रहना पड़ेगा। कारण आता है टेस्ट लेने के लिये - कहाँ तक तुम्हारी शान्ति है?

जैसे बाबा हमेशा कहते हैं पढ़ाई पढ़ना शुरू किया तो एक वर्ष के बाद एक्जाम होगा या छ: महीने के बाद होगा और यह तो पढ़ते जाओ, परीक्षा देते पास होते जाओ। ऐसे नहीं परीक्षायें आयेंगी तब पास होंगे। वो तो बड़ी-बड़ी आने वाली हैं, उसके पहले हम पास हो जायें। पास होने के लिये बिल्कुल सिम्पुल अच्छी बात है कि किसी को न देखो, किसकी न सुनो। कान मेरे हैं, आँखें मेरी हैं, उसको ट्रेनिंग देनी है कि न किसको देखो, न सुनो। आँखें खुली रहें, पर देखें नहीं। आंख तो बन्द कर सकते हैं, पर कान तो बन्द नहीं कर सकते हैं ना। पर इतनी नेचुरल अन्दर की शान्ति, इतना प्यार, इतना यह कान सुनते नहीं, आँखें देखती नहीं है। देखके क्या देखें? ऐसी कौन-सी बात है जो देखने लग जाएं। तो आँखे जो हमारी हैं ना वो इतनी अच्छी रहम, स्नेह और सच्चाई भरी हुई हों तो खुद भी खुश और भी खुश। भगवान जो सुनाता है कान वो सुनते हैं, कोई ऐसी अच्छी बात, अनुभव की बात सुनाता है वो सुनते हैं, बाकी जो काम की बात नहीं है वो सुनूं और सोचूं तो अन्दर का टाइम वेस्ट हुआ यानि निष्फल हुआ।

जिस घड़ी बाबा को देखो तो अन्दर से आवाज़ आता है कि बाबा आप कितने अच्छे हो, शान्ति से देखते ही सब काम पूरा कर देते हो। देवतायें भी इतने मीठे हैं, उनको देखते ही सब खुश हो जाते हैं। हमारा चरित्र ऊंचा हो जायेगा, सुधर जायेगा तो देखके खुश हो जायेंगे। देवतायें किसको ऐसे थोड़ेही कहते हैं तुम ऐसे न करो, ऐसे करो। बाबा भी अव्यक्त हो करके कुछ कहता थोड़ेही है परन्तु सामने जाते हैं तो हर बात का उत्तर मिल जाता है। कोई पूछते हैं तुम भगवान से बात कैसे करती हो? जहाँ-तहाँ ये क्वेश्चन पूछ लेते हैं - शान्ति से रहते हैं तो भगवान से बात हो सकती है। जो मन में बातें करते रहते हैं, उनकी भगवान से बातें नहीं हो सकती हैं। मन शान्त नहीं होगा तो बाबा जो कहता है वो सुनेंगे ही नहीं, तो करेंगे क्या? क्योंकि शान्त होंगे तो सुनेंगे। सुनेंगे तो करेंगे।

जो मुरली प्यार से नहीं पढ़ता है, वो रूखा-सूखा रहता है। तरावटी, इतना वैरायटी माल मिले फिर भी रूखी रोटी खाता रहे तो क्या कहेंगे! कम नसीब। जिंदा होते मुझे खाना कैसे है, पहनना क्या है, चलना कैसे है, बोलना कैसे है, यह सब शिवबाबा सिखलाते हैं। भोलानाथ है, वो कुछ ज्यादा नहीं कहता है परन्तु ऐसा कहता है जो शिव पापकटेश्वर है ना, तुम्हारे पाप कट जायें, आत्मा तुम मेरी बात को सुनो, समझो उस पर अमल करो तो कोई तेरे ऊपर माया की छाया भी नहीं पड़ेगी। सदा ही बाबा की छत्रछाया रहेगी।

यह संगम की घड़ी महान है, बाप ऊंचे ते ऊंचा है, घर मेरा शान्तिधाम है, स्वर्ग में आना है तो ऊंचे चरित्र, संस्कारवान

बनना है। तो जो बाबा कहता है दिनरात उसी सिमरण में रहो, तो आत्मा के अन्दर ताकत आती है। तो ऐसी बातें जो स्मृति में आई ना, बाकी सब बातें समाप्त माना जो हुआ सो अच्छा। अब क्या करने का है! अब अच्छा करेंगे तो कल अच्छा होगा। कल क्या होगा? फिक्र की बात नहीं है। जिसको कल क्या होगा, यह फिक्र है वो कोई काम का नहीं है। कल का जो फिक्र करता है वो आज क्या कर रहा है। कल के फिक्र को ले करके आज फिक्र में बैठा हुआ है तो उसकी लाइफ क्या है? बताओ। दुनिया वाले तो कल क्या होगा - इसी फिकरात में रहते हैं और बाप हमको कहता है, तुम अभी के भी फिकर में न रहो, बेफिकर रहो। कल के लिये भी तुम फिक्र मत करो क्योंकि जो ड्रामा में हुआ पड़ा है वही तो होगा इसलिये ठीक है, यह इतना पक्का हो और होगा भी अच्छा, यह गैरंटी है क्योंकि होने वाला ही है, यह 100 प्रतिशत पक्का है। उसमें कोई शक्य है ही नहीं, हुआ ही पड़ा है कलियुग को जाना ही है, यह दुनिया भी जानती है अच्छी तरह से। और सतयुग को आना ही है, सवेरा होना ही है। पर अभी का टाइम हमको गंवाना नहीं है इसलिये सवेरे-सवेरे उठाके बाबा कानों में कहता है यह करो, ऐसे करो। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"समर्पित व ट्रस्टी जीवन - दादी जी की नज़रों में"

1) जिसने अपनी जीवन बाबा को समर्पित कर दी उसे सूक्ष्म में भी यह संकल्प नहीं आ सकता कि पता नहीं अन्त तक चल सकूंगी या नहीं! अगर सूक्ष्म में भी यह संकल्प आता तो यह बड़ी माया है। संकल्पों में दृढ़ता है तो कमजोर संकल्प उठ नहीं सकते।

2) समर्पित आत्मा के लिए बुरा बोलना, बुरा देखना तो दूर रहा लेकिन बुरा सोचने का संकल्प भी नहीं आ सकता। उन्हें तो बस एक ही लगन है कि हमें अपनी बैग बैगेज कम्पलीट हिसाब-किताब चुक्तू करके बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है।

3) हमारा एक एक कदम सारे विश्व से सम्बन्धित है। हम यज्ञ के किले की एक एक ईट हैं। अगर एक ईट भी गिरी तो सारी दीवार हिला देगी। साधनों में वृत्ति गई तो साधना टूट जायेगी। जो बाबा को समर्पित हो गये, उनका जवाबदार बाबा है। वह कभी पैसे के पीछे नहीं भागते, कोई भी प्रकार का बिजनेस आदि भी नहीं कर सकते। उन्हें खिलाने वाला, पहनाने वाला, सुलाने वाला बाबा है, इसलिए वे सब प्रकार के चिंतन और चिंताओं से मुक्त रहते हैं। उनके लिए तो कहा जाता - सफेद कपड़ा, जेब खाली... वह है विश्व के मालिक।

4) समर्पित माना हर संकल्प श्रेष्ठ, शुद्ध पावन हो तब हमारी भावनाओं का असर दूसरों पर पड़ेगा। हम एक एक ऊंचा बनें तो किला मजबूत होगा। पवित्र संस्कार रखने से वायब्रेशन फैलते हैं। अगर एक को भी तूफान आता है तो वह सोचे कि हमारे वायब्रेशन सारे किले में फैल रहे हैं। अगर इतनी जवाबदारी समझे तो तूफान खत्म हो जायेगा। हमारा एक पावरफुल शुद्ध संकल्प पूरे किले को मजबूत बनायेगा।

5) मेरे ऊपर अगर कोई विशेष खर्चा होता तो यह भी मेरे खाते में जमा होता है। मेरे ऊपर इतना ही खर्च होना चाहिए जितना अनुकूल है। अगर किसी भी आदत के कारण कोई विशेष खर्च होता तो यह भी बोझ चढ़ता। जिसने पाई-पाई जमा करके दान दिया उसका जमा हो गया और मैंने अपने प्रति यूज़ किया तो मेरे खाते से ना (घाटा) हो गया।

6) हमें अपने संकल्प उतने खर्च करने हैं जिससे सारे वायुमण्डल में साइलेन्स का प्रभाव रहे। ऐसा न हो मेरे संकल्प साइलेन्स के वायब्रेशन को डिस्टर्ब करें, इसका भी कई गुणा हिसाब बनता है। मेरी एक की स्थिति खराब हुई तो उसका असर बहुतों पर पड़ता है।

7) समर्पित होकर अगर मेरा कोई एकस्ट्रा शौक है और मेरे को देख दूसरे कॉपी करते तो उसका भी बोझ मेरे ऊपर चढ़ता। मैं कोई विशेष सैलवेशन मांगती तो दूसरे भी मांगना शुरू करते। मेरे को देख दूसरे भी सीखते तो उसका वायुमण्डल जो बनता उसके निमित्त भी मैं बनी। जितना मैं त्याग वृत्ति में रहती तो मेरे को देख सब सीखते हैं तो मेरा उसमें जमा हो जाता। मेरे त्याग ने दूसरों में त्याग पैदा किया तो मेरा संग तारने वाला बना।

8) हमारा सम्पूर्ण त्याग हमारी सम्पूर्णता को समीप लायेगा। हमारे लिए आराम हराम है इसलिए हमें साधन नहीं चाहिए, साधना करनी है। हमारी मुख्य धारणा है त्याग, तपस्या और

सेवा। जितना मैं तपस्या करेंगी उतना औरों का कल्याण होगा। हमें देख दूसरे कॉपी करेंगे।

9) हमारे एक एक बोल को दूसरे नोट करते हैं, समझो हम कोई ऐसा बोल बोलती जो ईश्वरीय मर्यादा के विरुद्ध है तो दूसरों के भाग्य की रेखा को कट करने के निमित्त बन जाती क्योंकि हर एक मुझे कॉपी करता है। तो समर्पित आत्माओं पर विश्व के कल्याण का आधार है। एक एक आत्मा बाबा के साथ स्थापना के कार्य में बंधी हुई है। हम सारे विश्व को पावन बनाने की शक्ति देने के, शान्ति देने के निमित्त हैं। हम एक एक जवाबदार हैं। अगर हम अपने को जवाबदार समझेंगे तो अलबेलापन निकल जायेगा।

10) समर्पित जीवन में भले और कोई भी चिंता न हो, परन्तु अपनी उन्नति की चिंता सबको जरूर करनी है। यदि हमसे एक भी उल्टा कर्म होता है या मेरे प्रति किसी की वृत्तियों में भी गलत वायब्रेशन्स है तो वह सारे वातावरण को खराब कर देता है, इतनी हर एक की जवाबदारी है। चाहे हम चलते हैं, खाते हैं, घूमते हैं, कर्म करते हैं, चाहे सोते हैं, बहलते हैं, चिंतन करते हैं, परचिंतन करते हैं... इन सबका एक्शन, रिएक्शन जरूर होता है। अच्छा करते तो भी 100 गुणा रिटर्न है, अगर कोई गलत करते तो भी 100 गुणा दण्ड है।

11) समर्पित माना सम्पूर्ण ट्रस्टी तो ऐसी हमारी ट्रस्टी लाइफ हो, किसी भी चीज़ में आसक्ति न हो। थोड़ा भी किसी देहधारी से मोह न हो। खुद से अथवा दूसरों से हम नष्टोमोहा होकर रहें।

12) हम समय के पहले रुद्र बाबा पर पूरा-पूरा बलि चढ़ चुके हैं। बाबा कहते बच्चे अपना सब कुछ पुराना समर्पित कर दो तो मैं तुम्हें नया तन, नया मन और नया धन दूँ अर्थात् नई दुनिया में जब प्रकृति सतोप्रधान है तो वहाँ तुम्हारा सब कुछ नया होगा। तो देखना है कि हमने अपने पुराने संस्कारों की, स्वभावों की बलि चढ़ा दी है? मैं ऐसा कर्म कर रहीं हूँ जो दूसरा मुझसे प्रेरणा ले?

13) प्रवृत्ति वालों को तो कई प्रकार की प्रवृत्ति को देखना पड़ता, निभाना पड़ता, सम्भालना पड़ता। लेकिन जो समर्पित हैं वे उन बन्धनों से भी मुक्त हैं। हमारा तो जवाब है हम मुये मर गई दुनिया। हम बाबा तेरे पर बलिहार हो गये हैं। हमारे लिए दुनिया मरी पड़ी है। न हम दुनिया के हैं, न दुनिया हमारी है।

14) हम दुनिया को पैगाम देने वाले पैगम्बर हैं और कोई से किसी भी प्रकार का बंधन नहीं है। सभी को पैगाम देना, सन्देश देना... बाबा ने हम बच्चों को यह सेवा की ड्यूटी दी है लेकिन स्व-उन्नति के लिए बाबा ने कहा है - हे बच्चे, तुम हो बेहद के वैरागी, बेहद के त्यागी और बेहद के तपस्वी हो। तुम राजऋषि हो, तुम राजयोगी हो। एक बाबा के सिवाए तुम्हारा कोई नहीं। तुम बाबा के प्राण हो, बाबा तुम्हारे प्राण हैं और कोई नहीं।

15) हमारा दोस्त एक ही खुदा दोस्त है, हम आपस में दोस्त नहीं हैं। बाबा कहते अगर तुमने कोई को अपना पर्सनल दोस्त बनाता तो खुदा तुम्हारा दोस्त नहीं है। हम सब ईश्वरीय फैमिली के हैं, हमारा कोई पर्सनल दोस्त नहीं। हम देखती कि अगर कहीं कोई भी विघ्न पड़ता है तो विघ्न आने का पहला कारण है – दिल का दोस्त एक दो को बना देते हैं। चाहे कभी दिल की बातों की लेन-देन करना, चाहे दिल बहलाना, हंसी मजाक करना, यह सब सिद्ध करता है कि उनका दिलवर खुदा दोस्त नहीं है।

16) समर्पित का अर्थ ही है सर्वंश त्यागी। समर्पित माना ही पुरानी दुनिया से वैरागी और पक्के सन्यासी, पक्के त्यागी, पक्के तपस्वी। ऐसे समर्पित बच्चे ही 'विजयी माला' के विजयी रत्न हैं, विजयी रत्न थे इसलिए अभी 'विजयी रत्न' बनके ही जाना है क्योंकि बार-बार दिल में यह जरूर आता कि अब घर जाना है!

17) ऐसा अपना बैलेन्स सीट क्लीयर करो – जो धर्मराज भी फूलों से स्वागत करके, सलाम करके वतन में भेजे। सभी बाबा के ज्ञानी तू आत्मा बच्चे अपना बैलेन्स सीट ऐसा बनाओ जो धर्मराज दिल से खातिरी करे। यह नहीं कि देख तुमने यह गलती किया, यह तू भोग - तो यह सब यहाँ खत्म करके जाओ।

18) हमारा रिमार्क है कि अन्त में बाबा बांहें पसार कर कहे आओ बच्चे आओ, ऐसे गले लगाकर वतन में भेज दे, ऐसी स्थिति बनानी है। दिल कहे 100 प्रतिशत हमारा यह रिकार्ड हो। बाबा की श्रीमत अनुसार हमारा मन-वचन-कर्म हो। बाबा हमें सर्टीफिकेट दे कि यह संस्कारों से, संकल्पों से, दृष्टि, वृत्ति सभी से पास विद ऑनर है। ऐसी कमाल करो तब कहेंगे समर्पित। ऐसी कमाल नहीं किया तो समर्पित क्या हुआ!

19) हमारी संगमयुग की यह लाइफ बहुत वैल्युबुल है। जितना-जितना हम अपने जीवन में वैल्युज़ धारण करते उतना वैल्युबुल बनते हैं। जैसे 56 गुण गाये जाते, ऐसे 56 अवगुण भी हैं। इसकी भी लिस्ट बनाओ। जैसे ईर्ष्या है, आवेश है... इनके भी बहुत बाल बच्चे हैं। तो देखो कितने गुणों की माला मैंने धारण की है और अभी तक कितने अवगुण रहे हुए हैं? ऐसे ही बाबा ने हर मुरली में स्वमान दिये हैं, वरदान दिये हैं वह भी लिखो और चेक करो कि कौन-कौन से वरदान मैंने बाबा से लिये हैं और किस वरदान की कमी मेरे में है? उसका कारण और निवारण निकालो। जब ऐसी सम्पूर्ण चेकिंग हो तब कहेंगे सम्पूर्ण समर्पित।

Copy protected with Online-PDF-No-Copy.com